अहिंसा | वीगन

दया एवं अहिंसा मानव जीवन के आधार हैं। सच्चे और सभ्य लोग इस मानवीय आधार से जीवनपर्यन्त जुड़े रहते हैं। वीगन (निरवद्य) बनें।

पशु उद्योग में प्रचलित क्रूर प्रक्रियायें

पशु उद्योग में बहुत सारी क्रूर प्रक्रियायें होती हैं, जैसे कृत्रिम गर्भाधान, नर बच्चों के पैदा होते ही मार डालना या माँ से दूर कर देना, जानवरों को छोटी सी जगह में प्रचुर भोजन-पानी, हवा के अभाव में रखना, अपने सुविधानुसार उनके अंगों को क्षत-विक्षत कर देना, पूरे जीवन उनको घोर कष्ट देना और अंततः अपने स्वार्थ एवं लालच में बेज़ुबानों को मार डालना। पशु उद्योग में पीड़ित हर प्राणी हमारी ही तरह बेहद संवेदनशील और भावुक होता है, और इन सबको हमने ज़्यादातर अप्राकृतिक रूप से पैदा किया होता है।

मानवता । अहिंसा । वीगनवाद

मुर्गे

मुर्गे के नाम पर हम डेढ़ महीने के छोटे चूज़े को खाते हैं, जिसे दवाओं के द्वारा अप्राकृतिक तरीके से बढ़ाया जाता है। इन्हें कुछ ही हफ़्तों में इतना बड़ा कर दिया जाता है की इनकी हड्डियां इनका बोझ नहीं उठा पातीं, और यह दर्द में पड़े रहते हैं। मनुष्य प्रतिदिन लगभग १८-१९ करोड़ मुर्गों को अपने स्वाद एवं स्वार्थ के लिए मार देता है।

अंडे

मुर्गियां जहां प्राकृतिक तौर पर प्रतिवर्ष १२-१५ अंडे देतीं हैं, वहीं हम उनसे प्रतिवर्ष जबरदस्ती २५० से ३०० अंडे निकलवाते हैं। ये लगातार अंडे देते-देते ७-८ महीनों में ही अधमरी हो जाती हैं, और इनकी आंतें बाहर आ जाती हैं। इस निर्दयी उद्योग में प्रतिदिन दुनिया भर में २ करोड़ चूज़े निर्दयता से मार दिए जाते हैं, क्योंकि वे अंडे नहीं दे सकते।

भेंड़ - बकरी

दुनिया में कृत्रिम पैदा भेंड़-बकरी की कुल संख्या लगभग २००-२५० करोड़ है, जिसमें से हर साल हम लगभग ९०-१०० करोड़ भेंड़-बकरियाँ मारकर खा जाते हैं। कभी धर्म के नाम पर "क़ुर्बानी" और कभी स्वाद के लिए इन्हें हम बेनाम मौत देते हैं। १५-२० साल जीने वाले को हम १-१.५ साल में मार कर खा जाते हैं।

सुअर

सूअर बहुत समझदार होता है, उसमें ४-५ साल के बच्चे जितना दिमाग होता है। दुनियाभर में इस समय लगभग २०० करोड़ सुअर होंगे, जिनमें से १०० करोड़ को हम हर साल मारकर खा जाएंगे। जहाँ सुअर साल में एक बार बच्चा पैदा करते हैं, वहीं हम इनसे साल में ३ बार बच्चा पैदा करवाते हैं। हम उससे लगातार बच्चे निकलवाते रहते हैं, और फिर कुछ साल में उसे मार, खा लेते है।

YV Care

मछली

जलीय जीव हमसे बहुत भिन्न होते हैं, इसलिए हम उन्हें अपने जैसा समझ नहीं पाते। हम इतनी भारी संख्या में मछलियों को मारते हैं की इनकी मौत की गिनती आंकड़ों में नहीं हो सकती, इसलिए हम इन्हें टनों में गिनते हैं। हम न सिर्फ मछलियाँ मार रहे हैं, बल्कि समुद्र के समुद्र बर्बाद कर रहे हैं, जिसका सीधा दुष्प्रभाव पूरे "पारिस्थितिकी तंत्र" (Ecosystem) पर पड़ रहा है। यही हाल रहा तो हमारा विनाश दूर नहीं।

शहद

१०-१२ मधुमक्खियां जब पूरे जीवन जी तोड़ मेहनत करतीं हैं, तब जाकर एक छोटा चम्मच शहद बनता है। यह शहद ही इनके पूरे जीवन का आधार होता है, और हम अपने लालच में इन मधुमक्खियों से उनका खाना/खज़ाना छीन लेते हैं, जो उन्होंने बहुत मेहनत करके अपने और अपने वंश के लिए तैयार किया होता है। शहद उद्योग में सालाना करोड़ों मधुमक्खियां मारी जाती हैं। हमारे शहद के लालच में, शहद न बनाने वाली हज़ारों मधुमक्खियों की प्रजातियाँ विलुप्त होती चली जा रही हैं।

डेयरी

आज भारत बीफ़ निर्यातकों में शीर्ष तीन देशों में आता है। भारत को यह उपलब्धि, हमारे डेयरी पदार्थों के उपयोग की वजह से ही प्राप्त हुई है। डेयरी उत्पादों के हमारे लालच के कारण अधिकतर मासूम बछड़े बेरहमी से मार दिए जाते हैं, क्योंकि उनका दूध हम छीन लेते हैं। जब मवेशी दूध देने लायक नहीं रहते, तब उन मवेशियों को भी मारने के लिए बूचड़खाने भेज दिया जाता है। डेयरी का समर्थन कर हम सालाना ५-६ करोड़ मासूमों की हत्या का कारण बनते हैं।

चमड़ा

चमड़े के उत्पादन में भारत टॉप पर है, क्योंकि यहाँ पैसों के लिए बहुत बड़े पैमाने पर जानवरों की खेती होती है और डेयरी उद्योग सबसे बड़ा सप्लायर है चमड़ा उद्योग का। चमड़े के उत्पादन में लगे हुए लोगों और स्थानों की इतनी दुर्गति होती है, कि बहुत सारे देश अपने यहाँ चमड़ा बनाते ही नहीं हैं। हमारे यहाँ किसी को कोई फ़र्क नहीं पड़ता, इसीलिए सारे विकसित देश यह गन्दा काम भारत की भूमि पर करते हैं। आज चमड़ा इतना व्यापक हो चुका है, कि इसके उत्पादन में जानवर, नदियाँ, खेत, पूरी प्रकृति ही नष्ट होने के कगार पर है।

ऊन

ऊन बहुत ही क्रूर प्रक्रिया से आया होता है। बचपन में ही नर बच्चों का बेरहमी से अंडकोष निकाल दिया जाता है। उनके मल-मूत्र से ऊन खराब न हो जाए, इसलिए उनके पूरे होश में ही पूंछ और उसके आस-पास की पूरी चमड़ी ही काटकर निकाल दी जाती है, और वे बेचारे तड़पते रह जाते हैं। गर्म सलाखों से उनका सींग जला दिया जाता है। इस बेरहमी में, बहुत सारे बच्चे मर जाते हैं। ऊन लूटने के बाद इन भेड़ों को भी मारकर खा जाता है इंसान।

रेशम

एक किलो रेशम के लिए, लगभग ६,५०० रेशम के कीड़े ज़िंदा उबालकर मार दिए जाते हैं, और एक सुन्दर सी रेशमी साड़ी के लिए लगभग १०,००० से १५,००० रेशम के कीड़े मार दिए जाते हैं। जिसका मतलब है की हज़ारों करोड़ कीड़ों को हम सालाना मार देते हैं। पर क्या हमें वास्तव में इस क्रूरता की आवश्यकता है? इन कीड़ो के अनेकों प्रजातियों विनाश कर दिया है हमने।

पर्यावरण

५१% से भी ज्यादा ग्रीनहाउस गैसें माँस एवं डेयरी उद्योग से आती हैं। हम पशु उत्पाद के उपभोग में १-२ एकड़ जंगल हर सेकेंड काट रहे हैं। माँस और डेयरी के उत्पादन में ८-२० गुना ज़्यादा साधनों का इस्तेमाल हो जाता है, जो ग्लोबल वार्मिंग, भुखमरी, एवं जल-संकट जैसे भयंकर परिणामों का मुख्य कारण है।

समुद्र

हम प्रतिदिन लगभग ७५० करोड़ समुद्रीय जीवों को मार देते हैं, जितना मनुष्यों की कुल आबादी है। वैज्ञानिकों का कहना है कि मानवीय हस्तक्षेप की वजह से अगले २८ सालों में समुद्र खाली हो जाएगा। जबकि ऑक्सीजन का ७०% भाग हमें समुद्रीय पेड़-पौधों से ही मिलता है, यानी जीवन के लिए यह अतिआवश्यक है।

YV Care

स्वास्थ्य

आजकल की प्रचलित बीमारियाँ जैसे कैंसर, हृदयरोग, मधुमेह, इत्यादि की सबसे बड़ी वजह पशु आधारित आहार है। वनस्पति आधारित वीगन आहार अपने आप में संपूर्ण और स्वास्थ्यवर्धक होता है। वनस्पति आधारित आहार अपनाकर अनेकों लोगों ने अपनी गम्भीर बीमारियों से राहत पाई है, खुशहाल जीने के लिए।

डॉक्टर्स की सलाह

सारे समझदार डॉक्टर्स आज वीगन (निरवद्य) बनने की सलाह देते हैं। ६०-७०% भारतीय दूध पचा ही नहीं सकते, जिससे उनकी प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। वहीं माँस और डेयरी के सेवन से कैंसर, हृदयरोग और मधुमेह जैसी बीमारियों का खतरा बहुत बढ़ जाता है। हमें वनस्पति आधारित भोजन ही करना चाहिए, जैसे हर प्रकार के फल, फूल, सब्ज़ियाँ, फलियाँ, साबुत अनाज एवं दाने।

अधिक जानकारी के लिए

इंडियन वीगन ग्रुप्स

events@yvcare.in

+91 8928302122